वाणिज्य शिक्षा का अर्थ, प्रकृति एवं क्षेत्र

[MEANING, NATURE AND SCOPE OF COMMERCE EDUCATION]

वाणिज्य का अर्थ

[MEANING OF COMMERCE]

वाणिज्य का शाब्दिक अर्थ (Verbal Meaning of Commerce)—वाणिज्य शब्द का निर्माण 'व्यस्त' शब्द से माना जाता है। वाणिज्य शब्द अंग्रेजी भाषा के Business शब्द का पर्यायवाची शब्द है। अंग्रेजी भाषा (English Language) का 'बिजनेस' (Business) शब्द भी अंग्रेजी भाषा के 'Busy' शब्द से बना है जिसका अर्थ भी 'व्यस्त' से ही होता है। इसके अन्तर्गत व्यवसाय, औद्योगिक उत्पादन के प्रबन्ध, विपणन, बैंकिंग, वितरण, आर्थिक लाभ, वित्तिय व्यवस्था, विनिमय तथा राजस्व आदि का अध्ययन किया जाता है। वाणिज्य एक व्यापक शब्द है, जिसके अन्तर्गत हर प्रकार का व्यापार तथा इससे सम्बन्धित सहायक सेवाएँ जैसे—यातायात एवं संचार के साधन, बीमा, डाकघर, उत्पादन केन्द्र, बिक्री केन्द्र भण्डारण तथा मण्डियाँ आदि आते हैं, परन्तु इसके अन्तर्गत मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले व्यवसाय—अध्यापक, डॉक्टर, नर्स, वकील, जज, पुलिस, सेना, इंजीनियर आदि नहीं आते।

वाणिज्य शिक्षा का अर्थ

(MEANING OF COMMERCE EDUATION)

वाणिज्य का अर्थ समझ लेने के पश्चात् वाणिज्य शिक्षा का अर्थ जानना सरल हो जाता है। विद्यालय में वाणिज्य के क्षेत्र में आने वाले विभिन्न व्यावसायिक विषयों के पढ़ाने को व्यवसाय शिक्षा (Commerce Education) कहा जाता है। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में इसे व्यावसायिक प्रशासन (Business Administration) के नाम से जाना जाता है। जब अध्यापकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है, तब इसे **व्यावसायिक शिक्षक शिक्षा** (Commerce Teacher Education) के नाम से जाना जाता है।

Scanned by TapScanner

NATURE OF COMMERCE EDUCATION

— वाणिज्य शिक्षा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से व्यापारियों को अनेक कार्य करने के योग्य बनाती है।
— वाणिज्य शिक्षा का कार्य व्यक्तियों में उन कौशलों का विकास करना है, जो विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में कार्य करने की क्षमता बढ़ायें।
— वाणिज्य शिक्षा उत्पादकों और उपभोक्ताओं को जोड़ने में सहायक सिद्ध होती है।
— वाणिज्य शिक्षा द्वारा धन कमाने, संचय करने और व्यय करने का ज्ञान दिया जाता है।
— वाणिज्य शिक्षा आर्थिक एवं व्यावसायिक समस्याओं को समझने और उनके समाधान ढूँढने में सहायक सिद्ध होती है।
— वाणिज्य शिक्षा द्वारा उपभोक्ता सूचना, व्यक्तिगत वाणिज्यिक मामले तथा वाणिज्य से सम्बन्धित क्षमता का विकास किया जाता है।

वाणिज्य शिक्षा का क्षेत्र

[SCOPE OF COMMERCE EDUCATION]

वाणिज्य शिक्षा की प्रकृति को जान लेने से पता चलता है कि इस विषय का क्षेत्र मानव जीवन के व्यावसायिक एवं वाणिज्यिक वातावरण से सम्बन्धित होने के कारण विस्तृत एवं व्यापक है। एक ओर वाणिज्य शिक्षा में मानव एवं समाज की दैनिक आर्थिक, व्यापारिक तथा व्यावसायिक घटनाओं का अध्ययन है तो दूसरी ओर भूतकाल की आर्थिक, व्यापारिक तथा व्यावसायिक घटनाओं का वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है। वाणिज्य की विशालता व व्यापकता को निम्न तथ्यों से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) विभिन्न व्यवसायों का अध्ययन (Study of Different Vocations)—कोठारी आयोग (1964-66) की सिफारिशों के आधार पर लगभग सभी राज्यों ने + 2 स्तर पर वाणिज्य विषय को व्यावसायिक पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है। इस स्तर पर छात्रों की बैंकिंग, बीमा, आशुलिपि, टंकण, विक्रय कला, कार्यालय प्रबन्ध, बहीखाता, लेखा निरीक्षण, सचिवीय व्यवहार, कम्प्यूटर कार्यप्रणाली आदि का ज्ञान दिया जाता है।

(2) सामान्य वाणिज्य शिक्षा का अध्ययन (General Commerce Education)—अक्सर देखा गया है कि बहुत-से छात्र +2 के पश्चात् अपनी पढ़ाई छोड़ देते हैं। इसलिये आवश्यक है कि छात्रों को ऐसी सूचनाओं से अवगत करा देना चाहिये, जिससे उनमें वे क्षमतायें व योग्यतायें विकसित हो जायें, जिनकी उन्हें अपने व्यक्तिगत कार्यों और सेवाओं के लिये आवश्यकता होगी। इसलिये कहा जा सकता है कि बुद्धिमान व चतुर उपभोक्ता बनाने के लिये सभी लोगों को सामान्य वाणिज्य शिक्षा दी जानी चाहिये।

(3) मानवीय गुणों का विकास (Development of Human Values)—भावी जीवन का सफल एवं जागरुक नागरिक बनने के लिये आवश्यक है कि छात्रों में

Scanned by TapScanner

धैर्य, ईमानदारी, नम्रता, सद्भावना, सहयोग, सहिष्णुता, भ्रातृत्व जैसी भावनायें विकसित की जायें। उपरोक्त एवं ऐसी ही अन्य अभिवृत्तियों को विकसित कर छात्र एक अच्छा नागरिक बन सकते हैं और अपने व्यवसाय में शिखर तक पहुँच सकते हैं। इन गुणों एवं अभिवृत्तियों को विकसित करने के पर्याप्त अवसर वाणिज्य अध्ययन में ही मिलते हैं।

(4) तत्कालीन एवं व्यावसायिक घटनाओं का अध्ययन (Study of Current Economic and Business Events)—आज यातायात एवं संचार के आधुनिक साधनों के कारण संसार सिकुड़-सा गया है। इसलिये किसी देश में घटित घटना का प्रभाव केवल उस देश विशेष पर ही नहीं पड़ता है वरन उसका प्रभाव सभी देशों पर पड़ता है। यह बात आर्थिक, व्यापारिक, व्यावसायिक और वाणिज्यिक घटनाओं पर भी लागू होती है। अतः कोई भी व्यापारी, व्यवसायी और उद्यमी तभी जागरुक बन सकता है, जब उसे देश-विदेश में घटने वाली आर्थिक, व्यावसायिक, व्यापारिक और वाणिज्यिक घटनाओं का ज्ञान हो। यह योग्यता वाणिज्य शिक्षा द्वारा ही विकसित हो सकती है।

(5) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास (Development of International Understanding)—आधुनिक युग में जब देश-विदेश की घटनायें एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और हम एक-दूसरे पर निर्भर हो गये हैं तो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास की आवश्यकता हो गई है। यह कार्य भी वाणिज्य शिक्षा द्वारा किया जा सकता है।

(6) व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति (Acquisition of Practical Knowledge)—छात्र अपने दैनिक जीवन में अनेक व्यवसाय देखता है, उन्हें जानने को तत्पर रहता है। वाणिज्य शिक्षा द्वारा छात्र विभिन्न व्यवसायों के विषय में सैद्धान्तिक जानकारी प्राप्त करने के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त करता है। यह जानकारी उसे भावी जीवन के व्यवसाय के चयन करने में सहायक सिद्ध होती है।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वाणिज्य शिक्षा छात्रों में व्यावसायिक व्यवसायों के लिये आवश्यक कुशलतायें, ज्ञान एवं अभिवृत्तियाँ विकसित करती है, जिससे छात्रों को रोजगार प्राप्त करने और उसमें उन्नति करने की क्षमताओं का अभाव न रहे।

Scanned by TapScanner